"श्री गणेशाय नमः"

"अखण्ड - सनातन"

"धर्म, राष्ट्र और संस्कृति-तीनों का अखण्ड संगम"

धर्मो
रक्षति
रक्षितः

अखण्ड सनातन एकता दल

नवभारत का निर्माण

"धर्म की रक्षा करना कट्टरता नहीं कर्तव्य है"

"हिन्दू राष्ट्र को समर्पित"

संस्थापक
पंकज कुमार त्रिपाठी
अधिवक्ता, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद

॥ ॐ हं हनुमते नमः ॥

॥ किष्किन्धाकाण्ड ॥

॥ दोहा ॥

दोहा- बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ सो तनु बरनि न जाइ ।
उभय घरी महँ दीन्हीं सात प्रदच्छिन धाइ ॥ 29 ॥

अंगद कहइ जाउँ मैं पारा । जियँ संसय कछु फिरती बारा ॥
जामवंत कह तुम्ह सब लायक । पठइअ किमि सब ही कर नायक ॥1॥
कहइ रीछपति सुनु हनुमाना। का चुप साधि रहेहु बलवाना ॥
पवन तनय बल पवन समाना । बुधि बिबेक बिग्यान निधाना ॥2॥
कवन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं ॥
राम काज लगि तव अवतारा । सुनतहिं भयउ पर्बताकारा ॥3॥
कनक बरन तन तेज बिराजा । मानहुँ अपर गिरिन्ह कर राजा ॥
सिंहनाद करि बारहिं बारा । लीलहिं नाघउँ जलनिधि खारा ॥4॥
मारी। आनउँ इहाँ त्रिकूट उपारी ॥ सहित सहाय रावनहि
जामवंत मैं पूँछउँ तोही । उचित सिखावनु दीजहु मोही ॥5॥
एतना करहु तात तुम्ह जाई। सीतहि देखि कहहु सुधि आई ॥
तब निज भुज बल राजिवनैना । कौतुक लागि संग कपि सेना ॥6॥

॥ छंद ॥

कपि सेन संग सँघारि निसिचर रामु सीतहि आनिहैं।
त्रैलोक पावन सुजसु सुर मुनि नारदादि बखानिहैं ॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावई ।
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावई ॥

॥ दोहा॥

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि ।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि ॥ 30 (क) ॥

॥ सोरठा ॥

नीलोत्पल तन स्याम काम कोटि सोभा अधिक ।
सुनिअ तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ खग बधिक ॥ 30 (ख) ॥

।। श्री हनुमान चालीसा ।।

।। दोहा ।।

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निजमन मुकुरु सुधारि। बरनउं रघुबर बिमल जसु, जो दायक फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार। बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार।।

।। चौपाई ।।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुं लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुण्डल कुँचित केसा।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजे। कांधे मूंज जनेउ साजे।।
शंकर सुवन केसरी नंदन। तेज प्रताप महा जग वंदन।।
बिद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचन्द्र के काज संवारे।।
लाय सजीवन लखन जियाये। श्री रघुबीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।
जम कुबेर दिगपाल जहां ते। कबि कोबिद कहि सके कहां ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना।।
जुग सहस्र जोजन पर भानु। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लांघि गये अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रच्छक काहू को डर ना।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हांक तें कांपै।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरे सब पीरा। जपत निरन्तर हनुमत बीरा।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु संत के तुम रखवारे।। असुर निकन्दन राम दुलारे।।
अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुह्मरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै।।
अंत काल रघुबर पुर जाई। जहां जन्म हरिभक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई।।
सङ्कट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जय जय जय हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बन्दि महा सुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महं डेरा।।

।। दोहा ।।

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

अखण्ड भारत – अखण्ड सनातन

प्रस्तावना

भारत एक ऐसी भूमि है जहाँ सिर्फ मिट्टी ही नहीं, बल्कि समय स्वयं भी पवित्र है।यह एक ऐसा देश है जहाँ पहाड़ों में तपस्या की आग है, नदियों में आस्था की लहरें हैं, वनखंडों में देवत्व की गूंज है और मानव हृदय में सनातन का प्रकाश है।

अखण्ड-सनातन एकता दल का अभ्युदय 14 अगस्त 2026 को भारत की उस पावन भूमि (तीर्थराज प्रयाग) पर हुआ है जहाँ सनातन धर्म की ज्योति सदा प्रज्वलित रही । हमारा उद्देश्य केवल धर्म का स्मरण नहीं, बल्कि उसकी पुनर्स्थापना है-जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्य, सेवा और संस्कार से समाज की एकता में योगदान दे सके। हमारा यह संकल्प केवल विचार नहीं, बल्कि एक आंदोलन है जो प्रेम, यज्ञ, और धर्म के बल पर राष्ट्र को पुनः आत्मबल देगा।

अखण्ड-सनातन एकता दल केवल एक संगठन नहीं, बल्कि एक जागृत चेतना, एक प्रबल संकल्प और एक राष्ट्रीय पुकार है, जो समाज को एकसूत्र में पिरोने का कार्य कर रही है। आज का समय अनेक चुनौतियों से भरा हुआ है—जातिगत भेदभाव, सामाजिक असमानता, सांस्कृतिक विघटन और आपसी मतभेदों ने समाज की एकता को कमजोर करने का प्रयास किया है। ऐसे दौर में अखण्ड - सनातन एकता दल एक प्रकाशस्तंभ बनकर उभरा है, जो हमें हमारे मूल सनातन आदर्शों की ओर लौटने का आह्वान करता है और एक सशक्त, संगठित एवं जागरूक समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस संगठन की स्थापना केवल एक विचार नहीं, बल्कि एक महान उद्देश्य के साथ की गई है—सनातन संस्कृति के उन शाश्वत मूल्यों को पुनर्जीवित करना, जो हजारों वर्षों से हमारी सभ्यता की पहचान रहे हैं। सत्य, धर्म, करुणा, त्याग, सहिष्णुता और परोपकार जैसे आदर्श केवल शब्द नहीं हैं, बल्कि वे जीवन जीने की वह पद्धति हैं, जो समाज को सशक्त और समृद्ध बनाती है। अखण्ड-सनातन एकता दल इन मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य कर रहा है, ताकि हर व्यक्ति अपने जीवन में इनका अनुसरण कर सके और एक आदर्श समाज के निर्माण में योगदान दे सके।

आज आवश्यकता है कि हम अपने छोटे-छोटे स्वार्थों और संकीर्ण मानसिकताओं से ऊपर उठकर व्यापक दृष्टिकोण अपनाएँ। अखण्ड - सनातन एकता दल इसी सोच को बढ़ावा देता है। यह संगठन हर व्यक्ति को यह संदेश देता है कि हम सब एक हैं—हमारी संस्कृति एक है, हमारी पहचान एक है और हमारा उद्देश्य भी एक होना चाहिए। जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति इस भावना को आत्मसात करेगा, तभी सच्चे अर्थों में एकता स्थापित हो सकेगी।

इस दल का विशेष ध्यान युवाओं पर केंद्रित है, क्योंकि युवा शक्ति ही किसी भी

राष्ट्र की असली ताकत होती है। आज का युवा यदि जागरूक, संस्कारी और कर्तव्यनिष्ठ होगा, तो राष्ट्र का भविष्य स्वतः उज्ज्वल होगा। अखण्ड-सनातन एकता दल युवाओं को न केवल उनके गौरवशाली इतिहास से परिचित कराता है, बल्कि उन्हें अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक भी बनाता है। यह संगठन उन्हें प्रेरित करता है कि वे अपने भीतर छिपी शक्ति को पहचानें, समाज के लिए आगे आएँ और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएँ। इसके साथ ही, यह दल महिलाओं के सशक्तिकरण को भी अत्यंत महत्वपूर्ण मानता है। एक सशक्त समाज का निर्माण तब ही संभव है, जब महिलाएँ आत्मनिर्भर, शिक्षित और सम्मानित हों। अखण्ड - सनातन एकता दल समाज में महिलाओं के प्रति सम्मान और समानता की भावना को बढ़ावा देता है और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए निरंतर प्रयासरत रहता है।

सामाजिक कुरीतियाँ, अंधविश्वास और भेदभाव समाज की प्रगति में सबसे बड़ी बाधाएँ हैं। यह संगठन इन बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करता है और एक ऐसे समाज की स्थापना के लिए कार्य करता है, जहाँ हर व्यक्ति को समान अवसर और सम्मान मिले। अखण्ड-सनातन एकता दल का मानना है कि जब तक समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास और सम्मान नहीं पहुँचेगा, तब तक वास्तविक उन्नति संभव नहीं है।

यह संगठन केवल विचारों तक सीमित नहीं है, बल्कि कर्म के माध्यम से परिवर्तन लाने में विश्वास रखता है। विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक कार्यक्रमों, सेवा कार्यों और जनजागरूकता अभियानों के माध्यम से यह दल समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का निरंतर प्रयास करता है। पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा का प्रसार, निर्धनों की सहायता और राष्ट्रभक्ति की भावना को मजबूत करना इसके प्रमुख कार्यों में शामिल हैं।

आज समय की पुकार है कि हम सब एकजुट होकर अपने समाज, संस्कृति और राष्ट्र की रक्षा एवं उन्नति के लिए आगे आएँ। अखण्ड - सनातन एकता दल हमें यही प्रेरणा देता है कि हम अपने कर्तव्यों को समझें, अपने अधिकारों के प्रति सजग रहें और एक ऐसे भारत के निर्माण में सहयोग करें, जो शक्तिशाली, समृद्ध और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध हो।

अंततः, अखण्ड-सनातन एकता दल एक आंदोलन है—एक ऐसा आंदोलन जो हर हृदय में देशभक्ति, एकता और संस्कृति के प्रति गर्व की भावना जागृत करता है। यह केवल वर्तमान के लिए नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए एक सशक्त आधार तैयार कर रहा है। आइए, हम सब इस महान उद्देश्य में सहभागी बनें और एकजुट होकर एक अखण्ड, समृद्ध और गौरवशाली राष्ट्र के निर्माण का संकल्प लें।

सनातन धर्म

सनातन का अर्थ है 'सदा रहने वाला' या शाश्वत अर्थात जिसका न कोई आदि है न अंत। सनातन धर्म विश्व का सबसे प्राचीन धर्म है । हिंदू पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, यह वाराह कल्प (अरबों वर्ष) से अस्तित्व में है। जिसकी जड़ें ऋग्वेद (लगभग 4000-5000 वर्ष पुरानी परंपरा) और सिन्धु घाटी सभ्यता (5000+ वर्ष पूर्व) से जुड़ी हैं। पुरातात्विक साक्ष्य के रूप में मोहनजोदड़ो में मिले 5000 वर्ष पुराने पशुपतिनाथ की मोहर, योग-मुद्रा, यज्ञ कुंड और स्वास्तिक चिन्ह इसकी प्राचीनता के भौतिक प्रमाण हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं: "न हन्यते हन्यमाने शरीरे।" अर्थात आत्मा नष्ट नहीं होती- यही सनातन है।

सनातन धर्म का विस्तृत दर्शन

यह किसी किताब से शुरू नहीं हुआ, किसी व्यक्ति विशेष पर निर्भर नहीं, किसी एक प्रांत या जाति की संपत्ति नहीं। सनातन धर्म उतना ही विशाल है जितना आकाश, उतना ही गहरा है जितना महासागर, और उतना ही प्राचीन है जितना पृथ्वी का अस्तित्व।

श्री रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं: "सियाराममय सब जग जानी।" अर्थात यह जगत ही राम-तत्व है, सब में ईश्वर का स्वरूप है।

सनातन का मूल तत्व है सत्य का पालन , कर्तव्य का निर्वहन , कर्म को पूजा मानना , मानवता को सर्वोपरि रखना , धर्म की रक्षा करना । सनातन कभी किसी पर आक्रमण नहीं करता, लेकिन जब अत्याचार बढ़ते हैं, तो धर्म की रक्षा के लिए खड़े होना ही धर्म है। इसीलिए भगवान श्री राम ने रावण का अंत किया, भगवान श्री कृष्ण ने कंस और शिशुपाल को समाप्त किया। इसीलिए गुरु गोविंद सिंह के दो मासूम बेटों ने दीवार में चुने जाने का अपमान सहकर भी अपने धर्म का त्याग नहीं किया। इसीलिए लाखों साधु-संत, वीर योद्धा, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और श्रमण धर्म-रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर करते रहे।

सनातन धर्म कभी दमनकारी नहीं रहा यह प्रकृति और मानव के साथ संतुलन बनाने वाला धर्म है। यह विश्व के हर प्राणी को ईश्वर का ही अंश मानता है। इसीलिए हमारे समाज सनातन में कहा गया है "अहिंसा परमो धर्मः।" लेकिन इसके साथ ही यह भी कहा: "धर्म हिंसा तथैव च।" जब अधर्म बढ़े तो अधर्म के विनाश के लिए बल का प्रयोग भी धर्म है।

सनातन धर्म केवल पूजा-पद्धति नहीं है। यह एक जीवन पद्धति है-एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण, एक नैतिक मार्ग, एक आध्यात्मिक शक्ति और एक सांस्कृतिक पहचान है ।लेकिन यह भी उतना ही सत्य है कि इसी महान संस्कृति पर सबसे अधिक हमले हुए। कभी तलवार से,कभी छल-कपट से,कभी राजनीति के नाम पर,कभी शिक्षा और मीडिया के माध्यम से, और कभी समाज को बांटने वाली शक्तियों के जरिए।इतिहास उठाकर देखिए-जहाँ-जहाँ हिंदू समाज ने सिर उठाया, वहाँ-वहाँ विदेशी और विभाजनकारी शक्तियों ने उसे झुकाने की कोशिश की लेकिन सनातन के दीप को बुझाया नहीं जा सका। क्योंकि यह दीप किसी व्यक्ति का नहीं प्रकृति का नियम है।

आज भारत की परिस्थितियाँ बदल रही हैं। एक ओर जगत में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ रही है,वहीं दूसरी ओर धार्मिक धरोहरों पर हमले, साधुओं की हत्याएँ , मंदिरों का अपमान , हिंदू संस्कृति पर दुष्प्रचार अब भी जारी है।कई जगह कानून व्यवस्था के नाम पर हिंदू परंपराओं को ही निशाने पर लिया जाता है। मंदिर बनाना अपराध माना जाता है, लेकिन मंदिर तोड़ने वाले को "इतिहास का हिस्सा कहकर सही ठहराया जाता है। हिंदू त्योहारों को "प्रदूषण" कहा जाता है, लेकिन दूसरे समुदाय के उत्सवों पर सरकारें झुककर सहायता करती है। ये घटनाएँ किसी एक राज्य या शहर तक सीमित नहीं हैं ये एक सांस्कृतिक संघर्ष की ओर इशारा करती है।इसीलिए आज समय की मांग है कि हिंदू समाज न डरकर, न घबराकर-बल्कि जागकर, संगठित होकर, और सत्य के साथ खड़े होकर अपने अधिकार और अपनी संस्कृति की रक्षा करे। इसी जागरण, संगठन और संस्कृति-सुरक्षा की पवित्र भावना के साथ “अखण्ड-सनातन एकता दल” की स्थापना की गई है।यह दल न किसी के खिलाफ है, न हिंसा का समर्थन करता है। यह दल धर्म, राष्ट्र और संस्कृति के लिए दृढ़, शांतिपूर्ण, लेकिन अडिग संघर्ष का मार्ग है।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

सनातन धर्म और भारत

सनातन धर्म और भारत का संबंध अत्यंत गहरा, प्राचीन और आत्मिक है। भारत को सनातन धर्म की जन्मभूमि और कर्मभूमि माना जाता है, जहाँ हजारों वर्षों से ऋषि-मुनियों ने ज्ञान, तप और साधना के माध्यम से मानव जीवन के उच्चतम मूल्यों को स्थापित किया। भारत की संस्कृति, परंपराएँ, त्योहार, योग, आयुर्वेद और वेद-पुराण—सनातन धर्म की ही देन हैं, जो आज भी विश्व को मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं।भारत में विविधता के बीच एकता का जो अद्भुत स्वरूप दिखाई देता है, वह भी सनातन धर्म की सहिष्णुता और समभाव की भावना का परिणाम है। यहाँ हर जीव में ईश्वर का अंश मानकर उसका सम्मान किया जाता है। गंगा, हिमालय, मंदिर और तीर्थ स्थल इस आध्यात्मिक धरोहर के जीवंत प्रतीक हैं। सनातन धर्म और भारत का अटूट संबंध इस धरा की आत्मा और उसके सांस्कृतिक वैभव का प्रतीक है, क्योंकि यह धर्म केवल आस्था का मार्ग न होकर जीवन जीने की पद्धति है, जिसने सिंधु से लेकर कन्याकुमारी तक इस भूमि को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का दर्शन, ऋषियों की तपोभूमि, मंदिरों की कलात्मक अभिव्यक्ति, त्योहारों की जीवंतता, भाषाओं की विविधता और योग-आयुर्वेद जैसे अनमोल ज्ञान का अक्षय भंडार दिया है—जहाँ भारत की नदियाँ, पर्वत, वन और ग्राम सभी सनातन के सिद्धांतों से सिंचित हैं, और यही कारण है कि आज भी विश्व जब अध्यात्म, अहिंसा और सह-अस्तित्व का पाठ पढ़ना चाहता है, तो उसकी दृष्टि सबसे पहले भारत की ओर उठती है, क्योंकि सनातन के बिना भारत अधूरा है और भारत के बिना सनातन का वह चिरंतन प्रवाह संभव नहीं, जो सदियों से मानवता को उसके मूल से जोड़ने का कार्य कर रहा है। इस प्रकार, सनातन धर्म और भारत एक-दूसरे के पूरक हैं, जो मिलकर मानवता को शांति, संतुलन और मोक्ष की ओर अग्रसर करते हैं।

हिंदुओं पर इतिहास में हुए अत्याचार

भारत के इतिहास में अनेक ऐसे कालखंड आए जब हिंदू समाज पर सबसे क्रूर और अमानवीय अत्याचार हुए। ये सब प्रमाणिक तथ्य हैं, किसी प्रचार के नहीं।

1. मंदिरों का बड़े पैमाने पर विध्वंस :

इतिहासकार बताते हैं कि लगभग 40,000 से अधिक मंदिर लूटे गए या तोड़े गए।

कुछ प्रमुख उदाहरण : काशी विश्वनाथ मंदिर , कृष्ण जन्मभूमि, सोमनाथ मंदिर (17 बार) , मार्तंड सूर्य मंदिर, नालंदा विश्वविद्यालय का जलाया जाना (3 बार), कश्मीर , मथुरा , उज्जैन, कुंभेश्वर, विंध्याचल के मंदिर , ये मंदिर केवल पूजा स्थल नहीं थे ये संस्कृति, शिक्षा, कला और विज्ञान के केंद्र थे। मंदिरों को तोड़ना केवल धार्मिक हमला नहीं था पूरा समाज तोड़ने की रणनीति थी।

2. जज़िया कर और जबरन धर्मांतरण :

कई शासकों ने हिंदुओं पर "जज़िया" नामक कर लगाया जिसका उद्देश्य था या तो कर दो या धर्म बदलो।

हजारों हिंदुओं को तलवार के भय से धर्म बदलने को मजबूर किया गया। लाखों लोगों ने यातनाएँ झेली लेकिन अपने धर्म को नहीं छोड़ा। गुरू तेग बहादुर का बलिदान पूरी दुनिया में धार्मिक स्वतंत्रता की सबसे महान मिसाल है। उन्होंने किसी एक धर्म की नहीं, पूरे भारत की आत्मा की रक्षा की।

3. महिलाओं पर अत्याचार और अपहरण :

कई हमलावरों ने तलवार के दम पर हिंदू महिलाओं को निशाना बनाया।
इतिहास में अनेक वर्णन हैं जहाँ : कन्याओं का अपहरण , जबरन निकाह , गुलामी, जैसी घटनाएँ दर्ज हैं। कई राजपूत परिवारों ने अपनी बेटियों की रक्षा के लिए जौहर (सामूहिक आत्मदाह) किया। यह मजबूरी का निर्णय था, गौरव का नहीं।

4. शिक्षा और संस्कृति पर हमला :

गुरुकुल परंपरा को कमजोर करने के लिए मैकाले और ब्रिटिश शासन ने हिंदू शिक्षा प्रणाली को लगभग खत्म कर दिया। नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला जैसे विश्व-स्तरीय विश्वविद्यालय जला दिए गए। आज भी साधुओं पर हमले , मंदिरों पर पत्थरबाजी , धार्मिक यात्राओं पर आक्रमण, हिंदू त्योहारों पर नियम-कानून , मीडिया में हिंदू संस्कृति का मजाक ये सब घटनाएँ बताती हैं कि सांस्कृतिक संघर्ष अब भी जारी है।इसीलिए अब आवश्यकता है जागरण की , यह जागरण हिंसा का नहीं, धर्म-सुरक्षा और सांस्कृतिक अस्तित्व का जागरण है।

क्यों आवश्यकता है अखण्ड-सनातन एकता दल की ?

अखण्ड-सनातन एकता दल की आवश्यकता हिंदू समाज को जाति, भाषा और क्षेत्रवाद से ऊपर उठाकर एक सूत्र में पिरोने, सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करने और देश में राम राज्य की स्थापना के लिए है। यह धर्मांतरण, लव जिहाद, और वैचारिक आक्रमणों जैसी चुनौतियों का सामना करने के लिए हिंदुओं को जागरूक और संगठित करने का एक प्रमुख माध्यम है। पूर्व में हुए सनातन पर प्रहार के क्रम में कश्मीरी पंडितों के साथ सन् 1990 में हुई बर्बरता के बारे में सभी को पता है कि कैसे जबरन धर्म परिर्वतन के नाम पर छोटे छोटे बच्चो, महिलाओं को लाइन में खडा कर एक साथ गोली मार दी गयी। हम यह कैसे भूल सकते है कि रातो रात कश्मीरी पंडितों को अपना घर अपना व्यपार, अपने बाग-बगीचे तक छोड, कर भागना पडा। ज्ञात हो कि जिन लोगों ने कश्मीर छोडने से मना किया उनके पत्नी बच्चो को बंधक बना कर उन्ही के सामने बलात्कार करके उन्हें मार दिया गया। यह मात्र एक उदाहरण है, ऐसी कई घटनाए हमारे देश में आज भी घटित हो रही है इसके पीछे का मुख्य कारण हिन्दुओं में एकता का ना होना है क्योंकि हिंदू जातियों पंथों और भाषाओं के नाम पर बंटे हैं। यदि अभी भी नहीं जगे तो वह दिन दूर नही जब हम भी किसी ऐसी ही घटना का हिस्सा बन जाएंगे और यदि ऐसा ही होता रहा तो हमारे देश में भी हिन्दुओं की दशा पाकिस्तान और बागलादेश जैसी हो जायेगी, जहा पर न के बराबर बचे हिन्दुओं की बहन- बेटियों का अपहरण कर जबरन धर्म परिर्वतन करवा कर किसी मुस्लिम से शादी करा दिया जाता है और इस प्रकार से पाकिस्तान और बांगलादेश में सनातन धर्म को मानने वाले हिन्दुओं को पूर्णता समाप्त किया जा रहा है | आज भारत में एक अजीब स्थिति है-संस्कृति पर हमले हो रहे हैं लेकिन "सहनशीलता का नाम लेकर हिंदुओं से कहा जाता है कि "चुप रहो"।अगर हिंदू अपनी संस्कृति की रक्षा करे तो कहा जाता है- "कट्टरता बढ़ रही है।" अगर हिंदू अन्याय का विरोध करे तो उसे राजनीति का रंग दे दिया जाता है।लेकिन सच यह है-धर्म की रक्षा करना कट्टरता नहीं, कर्तव्य है।यही वह समय है जब हिंदू समाज को दिशा देने वाला एक ऐसा मंच चाहिए जो - इतिहास का सत्य बताए, हिंदुओं को संगठित करे, युवाओं को जागृत करे, धर्म और राष्ट्र को साथ लेकर चले शांतिपूर्ण लेकिन दृढ़ संघर्ष करे, सोशल मीडिया व शिक्षा में दुष्प्रचार का मुकाबला करे, इन्हीं उद्देश्यों से अखण्ड-सनातन एकता दल का जन्म हुआ है। यह दल न किसी के विरुद्ध है न किसी धर्म का शत्रु। यह दल अधर्म के विरुद्ध है- और यह लड़ाई बुद्धि, नीति, संस्कृति और एकता से लड़ी जाएगी। इसलिए उठिये - जागिये और संगठित हो कर भारत में सनातन को पुनः स्थापित करने के लिए एक साथ खडे होइए। अब सहेंगे नहीं, लड़ेंगे।

हमारा उद्देश्य

1. गौ रक्षा :

गौ माता की सेवा को सनातन धर्म में परम कर्तव्य माना गया है। उन्हें केवल दूध का स्रोत नहीं, बल्कि पालनहार के रूप में सम्मान देना चाहिए। सनातन धर्म में गाय को 'गौ माता' और चलता-फिरता देवता माना जाता है, जिसमें 33 कोटि देवी-देवताओं का वास होता है। गाय समृद्धि, पोषण और अहिंसा का प्रतीक है गाय की सेवा से पापों का नाश और मोक्ष की प्राप्ति मानी जाती है। हमारी इस प्रकार की संस्कृति होने के बावजूद भी 'गौ माता' को आज पशु से भी बुरे हाल में छोड़ दिया जाता है या कुछ अधर्मियों के द्वारा चंद पैसों के लिए उन्हें कसाई के हाथों बेच दिया जाता है। जिस प्रकार से हम अपनी जननी माता की सेवा करते हैं उसी प्रकार से हम सभी को 'गौ माता' की सेवा एवं रक्षा करने का संकल्प लेना चाहिए।

2. माँ गंगा की रक्षा :

माँ गंगा केवल एक नदी नहीं, बल्कि भारत की आस्था, संस्कृति और जीवन का आधार हैं। माँ गंगा के जल को दिव्य शक्तियों से युक्त माना जाता है। इसे पापों का नाश करने वाली नदी माना जाता है और यह भी माना जाता है कि इसके जल में स्नान करने वालों को आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त होती है।

माँ गंगा की रक्षा करना हम सभी का परम कर्तव्य है, क्योंकि यह न केवल एक नदी है, बल्कि हमारी संस्कृति और आस्था का प्रतीक है।आज गंगा जी प्रदूषण की गंभीर समस्या से जूझ रही हैं। कारखानों का गंदा पानी, प्लास्टिक कचरा, और पूजा सामग्री का अंधाधुंध विसर्जन उनके जल को दूषित कर रहा है। इससे न केवल जल की शुद्धता घटती है, बल्कि जलीय जीवों और मानव स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। आध्यात्मिक रूप से, माँ गंगा का शुद्धिकरण और सम्मान करना ही उनकी सच्ची रक्षा है। 'हर हर गंगे' का उद्घोष न केवल उनकी महिमा का गुणगान करता है, बल्कि हमें उनके संरक्षण के लिए प्रेरित भी करता है। यदि हम सब मिलकर छोटे-छोटे प्रयास करें, तो गंगा जी को स्वच्छ और पवित्र बनाए रख सकते हैं। माँ गंगा की रक्षा करना हमारे भविष्य की रक्षा करना है।

3. यज्ञ परंपरा का पुनर्जागरण :

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म। (यज्ञ सर्वोत्तम कर्म है। - वेद) हमारा एक प्रमुख उद्देश्य प्राचीन यज्ञ परंपरा को पुनर्स्थापित करना है। यज्ञ केवल अग्नि में आहुति देना नहीं, बल्कि आत्मबल, समर्पण और सेवा की भावना है। जब हम अपने स्वार्थ को त्यागकर समाज और प्रकृति के लिए समर्पण करते हैं, वहीं से यज्ञ का आरंभ होता है। अखण्ड-सनातन एकता दल प्रत्येक घर में यज्ञ की परंपरा को पुनः जीवित करने का संकल्प लेता है।

4. समाज में एकता का संदेश :

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। (एक साथ चलो, एक साथ बोलो, और एक साथ सोचो- ऋग्वेद) समाज की शक्ति उसके एकत्व में निहित होती है।जब हम एक-दूसरे के प्रति सौहार्द रखते हैं, तभी राष्ट्र सुदृढ़ बनता है। अखण्ड-सनातन एकता दल इस विचार को आधार बनाकर समाज के सभी वर्गों को जोड़ने का कार्य कर रहा है। हमारा ध्येय है "विचार में भिन्नता हो सकती है, पर हृदय में विभाजन नहीं।"

5. नारी शक्ति का सम्मान :

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। (जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं।) नारी शक्ति का सम्मान भारतीय संस्कृति का मूल आधार है, जहाँ नारी को शक्ति, सृजन और करुणा का प्रतीक माना गया है। नारी शक्ति महिलाओं के अदम्य साहस, आत्मनिर्भरता, नेतृत्व क्षमता और संघर्ष का प्रतीक है, जो परिवार से लेकर राष्ट्र निर्माण तक सक्रिय भागीदारी निभाती हैं। स्त्री केवल परिवार की धुरी नहीं बल्कि समाज की दिशा है। यह भारतीय संस्कृति में चेतना और सृजन की शक्ति है । हमारी संस्था नारी शक्ति के उत्थान, सुरक्षा और सम्मान को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है। अखण्ड-सनातन एकता दल प्रत्येक माता, बहन और बेटी को समाज की शक्ति रूप में सम्मानित करने का संकल्प लेता है।

6. असहाय वृद्धों और अनाथ बच्चों का दर्द :

जब समाज अपनी जड़ों को भूल जाता है, तब विकास के बड़े-बडे दावे खोखले लगने लगते हैं। सोचिए, उन बूढ़े मां-बाप के दिल पर क्या गुजरती होगी जिसने अपनी पूरी जिंदगी औलाद को पैरों पर खड़ा करने में न्योछावर कर दी, लेकिन आज वही मां-

बाप दो वक्त का भोजन और इलाज के लिए तरस रहे हैं? उस मासूम बच्चे का क्या कसूर है, जिसके सिर से मां-बाप का साया उठ गया और अब सड़कों की धूल ही उसका मुकद्दर बन चुकी है? सड़कों के किनारे अपनों द्वारा त्यागे गए असहाय बुजुर्गों की बहती आंखें और अनाथ बच्चों का बिलखता बचपन हमारे समाज के मुंह पर एक तमाचा है। अब वक्त आ गया है कि हम अपनी जिम्मेदारी समझें! हम खामोश दर्शक बनकर अपनी संस्कृति को मरते हुए नहीं देख सकते। "अखण्ड - सनातन एकता दल" केवल एक संस्था नहीं, बल्कि इस सामाजिक अन्याय के खिलाफ उठी एक क्रांति की मशाल है। हमारा परम धर्म है कि हम आगे आएं, इन असहाय बुजुर्गों को उनका खोया हुआ सम्मान लौटाएं और अनाथ बच्चों को छत्रछाया देकर उनका भविष्य संवारें। सनातन का अर्थ ही सेवा है।

7. दिव्यांगजनों की सेवा एवं सहयोग :

"अखण्ड - सनातन एकता दल" का उद्देश्य केवल सहायता करना नहीं, बल्कि दिव्यांगजनों के जीवन में सम्मान, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का प्रकाश फैलाना है। हमारा विश्वास है कि दिव्यांगता किसी की क्षमता को सीमित नहीं करती। हम शिक्षा, रोजगार, आवश्यक साधनों और सामाजिक सम्मान के माध्यम से उन्हें सशक्त बनाने का संकल्प लेते हैं। आइए, हाथ मदद के लिए नहीं, साथ निभाने के लिए बढ़ाएँ—क्योंकि सशक्त दिव्यांग, सशक्त समाज की पहचान हैं।

8. पर्यावरण की सुरक्षा :

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। (पृथ्वी मेरी माता है, और मैं उसका पुत्र हूँ।) पर्यावरण संरक्षण केवल वैज्ञानिक नहीं, बल्कि धार्मिक दायित्व है। वृक्ष, जल, वायु, अग्नि और आकाश- ये पंचमहाभूत हमारे अस्तित्व का आधार हैं। " अखण्ड-सनातन एकता दल " यज्ञ, वृक्षारोपण और नदी संरक्षण को धर्म का अंग मानता है। हम मानते हैं - "प्रकृति की सेवा ही सृष्टि की रक्षा है।"

9. संगठन की शक्ति :

एकत् रत्नं महदस्ति बलं तत्र संगतेषु। (एकता में ही महान बल निहित है।) संगठन ही शक्ति का मूल है। व्यक्ति अकेला सीमित होता है, पर जब वह समूह से जुड़ता है, तो अपार सामर्थ्य प्राप्त करता है। एकता में ही सबसे बड़ी ताकत निहित है।

जब लोग एकजुट होकर, आपसी प्रेम और सहयोग से किसी उद्देश्य के लिए काम करते हैं, तो वे किसी भी कठिन समस्या को आसानी से सुलझा सकते हैं। यह सूत्र परिवार, समाज और राष्ट्र की उन्नति का आधार है, जो व्यक्तिगत प्रयासों की तुलना में सामूहिक प्रयास को अधिक सफल बनाता है। अखण्ड-सनातन एकता दल इस संगठन शक्ति को धर्म, संस्कृति और सेवा के लिए समर्पित करता है। हम मानते हैं "संगठन बिना लक्ष्य असंभव है, और लक्ष्य बिना संगठन निष्फल।"

10. युवा और संस्कृति :

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वसन्निबोधत।

(उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्त करो- कठोपनिषद्)

युवा और संस्कृति एक-दूसरे के पूरक हैं, जहाँ युवा शक्ति सांस्कृतिक विरासत को आधुनिकता के साथ जोड़कर आगे बढ़ाती है। युवा समाज की ऊर्जा है। यदि यह ऊर्जा सही दिशा में प्रवाहित हो, तो राष्ट्र अजेय बन सकता है। हमारा लक्ष्य है कि युवा केवल आधुनिक न हों, बल्कि आध्यात्मिक भी बनें। " अखण्ड-सनातन एकता दल " युवाओं को सेवा, संस्कार और राष्ट्रप्रेम के पथ पर अग्रसर करने का कार्य कर रहा है

11. भविष्य की दिशा :

धर्मो रक्षति रक्षितः। (जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है।) यह संस्कृत का एक सनातन सत्य है, यह केवल पूजा-पाठ नहीं, बल्कि नैतिकता, सदाचार और न्याय का मार्ग है। जो धर्म का नाश करता है, धर्म उसका नाश करता है (धर्म एव हतो हन्ति...)। भविष्य उसी का उज्ज्वल होता है जो अपने धर्म, संस्कृति और कर्तव्य का पालन करता है। हमारा उद्देश्य एक ऐसा भारत बनाना है जो विज्ञान में प्रगतिशील और संस्कृति में दृढ़ हो।

उद्देश्य :

सनातन धर्म के गौरव का पुनर्जागरण।
समाज में जागरूकता, एकता और आत्मविश्वास बढ़ाना।
युवाओं को सनातन संस्कृति से जोड़ना।
हिंदू तीर्थस्थलों और परंपराओं की रक्षा करना ।
जरूरतमंदों की सहायता, सेवा और सामाजिक कार्य करना ।
इतिहास के सच को डर के बिना प्रस्तुत करना।
सनातन के खिलाफ चल रहे दुष्प्रचार का शांतिपूर्वक प्रतिरोध करना।
राजनीति को धर्म, नौति और मूल्यों से जोड़ना।
राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखना।

लक्ष्य :

एक ऐसा भारत, जहाँ धर्म, राष्ट्र और संस्कृति एक साथ उन्नति करें। एक ऐसा समाज, जहाँ-रामराज्य जैसे आदर्श हों , सत्य और न्याय सर्वोच्च हों , भ्रष्टाचार और अन्याय न हों, युवाओं को उद्देश्य मिले , महिलाएँ सुरक्षित हों , मंदिर और संस्कृति संरक्षित हों ।

प्रतिज्ञा :

मैं अखण्ड-सनातन एकता दल का कार्यकर्ता होकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि :
मैं सनातन धर्म के मूल्यों का पालन करूँगा।
राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानूँगा।
अधर्म, अन्याय और संस्कृति विरोधी कृत्यों का शांतिपूर्ण विरोध करूँगा।
समाज में सत्य, शांति और एकता का प्रसार करूंगा।
इतिहास और धर्म के सम्मान की रक्षा करूँगा।
कभी किसी के प्रति नफरत नहीं फैलाऊँगा, लेकिन धर्म-रक्षा के लिए सदैव दृढ़ रहूँगा।
मैं हमेशा राष्ट्र, धर्म और संस्कृति के उत्थान का कार्य करूँगा।

संस्थापक का संदेश

भारत के समस्त सनातनी हिंदू बहनों और भाइयों को मेरा सादर नमन। सनातन धर्म प्राचीन भारतीय संस्कृति, दर्शन और ज्ञान की अखण्ड धारा है, जो वसुधैव कुटुम्बकम् (विश्व एक परिवार है) के संदेश को मानता है। हिन्दू समाज को संगठित और मजबूत बनाने का हमारा संकल्प निरंतर आगे बढ़ रहा है, जिसे विभिन्न सम्मेलनों के माध्यम से बढ़ावा दिया जा रहा है। हमारा यह प्रयास अब एक आंदोलन का रूप ले चुका है। अखण्ड-सनातन एकता दल संस्था का उद्देश्य केवल एक संगठन बनाना नहीं बल्कि एक ऐसी चेतना जगाना है, जो व्यक्ति समाज और राष्ट्र तीनों को जोड़ सके। हमारा मार्ग कठिन हो सकता है परंतु धर्म मार्ग सदैव प्रकाशमय रहता है। अखण्ड-सनातन एकता दल की विचारधारा किसी के विरुद्ध नहीं है यह दल उन सभी शक्तियों के विरुद्ध है, जो भारत की संस्कृति, धर्म और एकता को तोड़ना चाहती हैं। मैं हर हिंदू भाई-बहन से आग्रह करता हूँ-उठो, जागो और एक हो जाओ। समय का आह्वाहन है। आइए हम सब मिलकर एक ऐसे भारत की स्थापना करें जहां हर हृदय में सेवा हो, हर घर में यज्ञ की ज्योति जले और हर व्यक्ति में सनातन संस्कृति का प्रकाश प्रज्वलित हो सके। राष्ट्र और धर्म तुम्हें पुकार रहे हैं। हम सभी एक परिवार हैं, और हमारा कर्तव्य है कि समाज को विभाजन से नहीं,बल्कि प्रेम और धर्म से जोड़ें। अखण्ड-सनातन एकता दल प्रत्येक व्यक्ति से यह संकल्प चाहता है कि वह अपने कर्म, समय और श्रद्धा से सनातन संस्कृति की रक्षा में भाग ले। हमारा संकल्प है-हिंदू समाज को संगठित करना, इतिहास के सत्य को उजागर करना, युवाओं को सही दिशा देना, सामाजिक सेवा और राष्ट्रनिर्माण में सहयोग करना क्योंकि सनातन धर्म केवल आस्था नहीं, हमारी आत्मा है।

"साथ ही साथ मैं संस्था के अपने उन सभी कार्यकर्ताओं से भी कहना चाहता हूं की पूरी हिम्मत और पूरी ताकत के साथ आप आगे बढ़ो यह समय सिर्फ सोचने का नहीं बल्कि कुछ कर गुजरने का है। हमें हमारे हर उस हिंदू भाई की ताकत बनना है जो खुद को अकेला समझ रहा है, जो खुद को असहाय समझ रहा है और जो खुद को कमजोर समझ रहा है आप उनकी ताकत हैं यह संस्था उनका भरोसा है उनके इस विश्वास को आप और बल दीजिए। यह संस्था आपको समर्पित है।

सनातन राष्ट्रगीत

एकता हिंदुओं में ना होगी हर कोई तब सताता रहेगा
हिंदू मिट जाएंगे इस धरा से जो भी चाहे डराता रहेगा
एकता हिंदुओं में ना होगी.....

अब मिटा दो परस्पर की दूरी, एक होना बहुत है जरूरी-2
शास्त्र अपना पुनः हम संभाले शस्त्र को भी उठाना पड़ेगा
हिंदू मिट जाएंगे इस धरा से जो भी चाहे डराता रहेगा
एकता हिंदुओं में ना होगी.....

चल उठा ले अब हम इस कसम को, ये वतन है हमारा रहेगा-2
हम सनातन अखंड बनाएं साथ सबको ही आना पड़ेगा
हिंदू मिट जाएंगे इस धरा से जो भी चाहे डराता रहेगा
एकता हिंदुओं में ना होगी.....

भारत की है महिमा पुरानी, यह सनातन है इसकी निशानी-2
बिछड़ों को हम पुनः से मिलाएं दिल की दूरी मिटाना पड़ेगा
हिंदू मिट जाएंगे इस धरा से जो भी चाहे डराता रहेगा
एकता हिंदुओं में ना होगी.....

मात्र भारत ही हिंदू वतन है, और कहीं भी नहीं है ठिकाना-2
गर अभी भी नहीं हम जगे तो फिर तो सब कुछ गंवाना पड़ेगा
हिंदू मिट जाएंगे इस धरा से जो भी चाहे डराता रहेगा
एकता हिंदुओं में ना होगी.....

हिंदू राष्ट्र है अब तो बनाना, ये कसम हम सभी को है खाना -2
इस अखंड सनातन की ताकत दुनिया को फिर दिखाना पड़ेगा
हिंदू मिट जाएंगे इस धारा से जो भी चाहे डराता रहेगा

एकता हिंदुओं में ना होगी हर कोई फिर सताता रहेगा
हिंदू मिट जाएंगे इस धरा से जो भी चाहे डराता रहेगा
एकता हिंदुओं में ना होगी.....

“हम शांतिपूर्ण हैं लेकिन निष्क्रिय नहीं,
हम सहनशील है लेकिन कायर नहीं”

पंकज कुमार त्रिपाठी
अध्यक्ष
अखण्ड-सनातन एकता दल

प्रधान कार्यालय : 138K/1, एम0जी0 मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज, उ0प्र0, भारत - 211001
दूरभाष : 0532-4531477, +91 9958285956

Contact us on :

Website : www.akhandsanatanekta.com Email : info@akhandsanatanekta.com FB : fb@akhandsanatanektadal
Youtube : @akhandsanatanektadal Twitter : @akhandsanaatan Insta : @akhandsanatanektadal